CHAPTER 11

कवित्त / सवैया

PAGE 67, प्रश्न और अभ्यास

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:1

कवि ने 'चाहत चलन ये संदेसो ले सुजान को' क्यों कहा है?

उत्तर - इस पंक्ति में, कवि की अपनी प्रेमिका से मिलने की तड़प का वर्णन है। वह अपनी प्रेमिका से मिलने की प्राथन करता है। परन्तु उसकी प्रार्थना का असर उसकी प्रेमिका पर नहीं होता है। कवि को प्रतीत होता है की उसकी मृत्यु का समय आ चूका है। वह कहते है की बहोत स्ममय हो गए तुम्हरा कोई सन्देश नहीं आया है। यदि तुम्हरा सन्देश मिल जाए तो उसके बाद मई शांति से मृत्यु को प्राप्त हो जाऊँ।

12:1:11: प्रश्न और अभ्यास:2

कवि मौन होकर प्रेमिका के कौन से प्रण पालन को देखना चाहता है?

उत्तर - कवि कहते है कि उनकी प्रेमिका उनके प्रति कठोर है। कवि कहते है की वह मौन धारण करके देखेंगे की कब तक प्रेमिका की कठोरता बनी रहती है। प्रेमिका इतनी कठोर हो गयी है की न ही कोई सन्देश भेजती है और न ही मिलने आती है। कवि व्याकुलता से बार बार प्रेमिका को पुकारता है परन्तु वह कवि की पुकार को अनसुना कर देती है।

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:3

कवि ने किस प्रकार की पुकार से 'कान खोलि है' की बात कही है?

उत्तर - 'कान-खोलि' से कवी अपनी प्रेमिका के कान खोलने की बात कहते है। कवि कहते है की कब तक उनकी प्रेमिका उनके पुकार को अनसुना करेगी। एक दिन वो खोलेगी और उनकी पुकार अवश्य सुनेगी।

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:4

प्रथम सवैये के आधार पर बताइए कि प्राण पहले कैसे पल रहे थे और अब क्यों दुखी हैं?

उत्तर - प्रथम सवैये के अनुसार पहले कवि की प्रेमिका उनके पास ही थी। प्रेमिका को देखकर कवि हर पल सुख प्राप्त करता था। वह उनके जीवित होने की वजह थी। परन्तु उनकी प्रेमिका उनको छोड़कर जा चुकी है। यह वियोगावस्था उन्हें व्याकुल कर रहा है। वह अपनी प्रेमिका से मिलने के लिए व्याकुल तथा दुखी है।

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:5

घनानंद की रचनाओं की भाषिक विशेषताओं को अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर - घनानंद की रचनाओं की भाषिक विशेषताओं कुछ इस प्रकार है :

(**क**) घनानंद ने अपनी रचनाओं में अलंकारों का बहुत सुंदर वर्णन किया है। उन्होंने आभूषणों का बड़ी दक्षता के साथ उपयोग किया। उनके कौशल का परिचय उन्हें अपनी रचनाओं को पढ़ते समय पता चलता है।

(**ख**) घनानंद ब्रजभाषा के प्रवीण कवि थे। उनकी भाषा साहित्यिक है।

(**ग**) उनकी भाषा में साक्षरता का गुण देखा जाता है।

(**घ**) वे काव्य भाषा में रचनात्मक के जनक भी थे।

PAGE 68

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:6

निम्नलिखित पंक्तियों में प्रयुक्त अलंकारों की पहचान कीजिए।

(क) कहि कहि आवन छबीले मनभावन को, गहि गहि राखति ही दैं दैं सनमान को।

(ख) कूक भरी मूकता बुलाए आप बोलि है।

(ग) अब न घिरत घन आनंद निदान को।

उत्तर -

(क) इस पंक्ति में 'कहि कहि' ,गहि गहि ,तथा दै दै शब्दों एक ही शब्द का बार बार आना पुनरुक्ति अलंकार है **।**

(ख) प्रस्तुत पंक्ति में उन्होंने अपनी चुप्पी को कोयल की कूक बताया है। इसके माध्यम से कवि अपनी प्रेमिका पर व्यंग्य करता है। कवि के अनुसार भले ही वह कहे फिर भी वो वापस आ जाएगी। हम जानते हैं कि कोई भी चुप्पी और

खामोशी नहीं सुन सकता है, लेकिन फिर भी कवि का मानना है कि सुनने से यह दूर हो जाएगा, इसलिए यह विरोधाभास अलंकार है।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति में 'घन आनंद' शब्द के दो अर्थ हैं। एक का अर्थ है आनंद और दूसरे का अर्थ है घनानंद। इसके अलावा, शब्द 'घ' की पुनरावृत्ति के कारण अनुप्रास अलंकार है।

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:7

निम्नलिखित का आशय स्पष्ट कीजिए-

(क) बहुत दिनान को अवधि आसपास परे/खरे अरबरनि भरे हैं उठि जान को

(ख) मौन हू सौं देखिहौं कितेक पन पालिहौ जू/कूकभरी मूकता बुलाय आप बोलिहै।

(ग) तब तौ छबि पीवत जीवत हे, अब सोचन लोचन जात जरे।

(घ) सो घनआनंद जान अजान लौं टूक कियौ पर वाँचि न देख्यौ।

(ङ) तब हार पहार से लागत हे, अब बीच में आन पहार परे।

उत्तर -

(क) प्रस्तुत पंक्ति में, कवि यह कहना चाहता है कि आपका इंतजार किए हुए बहुत समय बीत चुका है। मैं मृत्यु को प्राप्त होने वाला हूँ। भाव यह है कि कवि को आशा है कि उसकी प्रेमिका आएगी लेकिन वह नहीं आई। उनके जीवन के कुछ दिन ही शेष बचे है और वो अपनी प्रेमिका को अंतिम दिनों में देखना चाहते है।

(ख) कवि घनानंद कहते हैं कि वह चुप होकर देखना चाहते हैं कि उनकी प्रेमिका कब तक उनसे दूर रहती है। कवी को आशा है की उनकी कूक भरी ख़ामोशी प्रेमिका को व्याकुल कर देगी और वो वापस आ जाएगी। कवी की ख़ामोशी प्रेमिका को बोलने के लिए विवश कर देगी।

(ग) प्रस्तुत पंक्ति का आशय यह है कि पहले कवि की प्रेमिका उनके पास ही थी। प्रेमिका को देखकर हर पल सुख प्राप्त करता था। वह उनके जीवित होने की वजह थी। परन्तु उनकी प्रेमिका उनको छोड़कर जा चुकी है। यह वियोगावस्था उन्हें व्याकुल कर रहा है। वह अपनी प्रेमिका

से मिलने के लिए व्याकुल तथा दुखी है। परन्तु उसे अभी भी प्रेमिका के वापस आने की आशा है।

(घ) इस पंक्ति में कवी कहते है की उन्होंने अपनी प्रेमिका को एक पात्र लिखा था जिसमे अपने मन की सारा व्यथा लिख दिया था। परन्तु उनकी प्रेमिका ने वो पत्र फाड़ के फेंक दिया। उनकी प्रेमिका उनकी व्याकुलता को बिलकुल नहीं समझती।

(ङ) इस पंक्ति में कवि का आशय यह है कि जब कवी की प्रेमिका कवी के साथ रहती थी तो उसकी बाहों का हार कवि को पहाड़ के सामान लगता था। परन्तु अब उन दोनों के बीच पहाड़ के समान वियोग उपस्थित है।

12:1:11:प्रश्न और अभ्यास:8

संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए-

(क) झूठी बतियानि की पत्यानि तें उदास है, कै ..... चाहत चलन ये संदेशो लै सुजान को।

(ख) जान घनआनंद यों मोहिं तुम्है पैज परी ..... कबहूँ तौ मेरियै पुकार कान खोलि है।

(ग) तब तौ छबि पीवत जीवत हे, ...बिललात महा दुःख दोष भरे।

(घ) ऐसो हियो हित पत्र पवित्र ..... टूक कियौ पर बाँचि न देख्यौ।

उत्तर -

(क) प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति अंतरा भाग दो नमक पुस्तक में संकलित कविता से ली गयी है। इसकी रचना रीतिकाल के कवि घनानंद ने की है। प्रस्तुत पंक्ति में कवि अपनी प्रेमिका के वियोग से उत्पन्न अपने दुःख का वर्णन करते है।

व्याख्या : कवी अपनी है कि मैं तुम्हरे झूठ पर भरोसा करने के कारण आज दुखी हूँ। मुझे आनंद देने वाले बदल भी अब दिखाई नहीं दे रहे है। मेरी मृत्यु। मेरे प्राण सिर्फ इस लिए रुके है की तुम्हारा कोई सन्देश आये तो उसको पढ़ के मृत्यु को प्राप्त हो जाएँ।

(ख) प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति अंतरा भाग दो नमक पुस्तक में संकलित कविता से ली गयी है। इसकी रचना रीतिकाल के कवि घनानंद ने की है। प्रस्तुत पंक्ति में कवि अपनी

प्रेमिका के वियोग से उत्पन्न अपने दुःख का वर्णन करते है।

व्याख्या: कवि घनानंद कहते हैं कि वह चुप होकर देखना चाहते हैं कि उनकी प्रेमिका कब तक उनसे दूर रहती है। कवी को आशा है की उनकी कूक भरी ख़ामोशी प्रेमिका को व्याकुल कर देगी और वो वापस आ जाएगी। कवी की ख़ामोशी प्रेमिका को बोलने के लिए विवश कर देगी।

(ग) प्रसंग: प्रस्तुत पंक्ति अंतरा भाग दो नमक पुस्तक में संकलित कविता से ली गयी है। इसकी रचना रीतिकाल के कवि घनानंद ने की है। प्रस्तुत पंक्ति में कवि अपनी प्रेमिका के वियोग से उत्पन्न अपने दुःख का वर्णन करते है।

व्याख्या : कवि कहते है जब मैं तुम्हारे साथ था तो सुखी था। तुम्हे देखकर ही हर सुख प्राप्त कर लेता था। तुमसे अलग होकर हूँ। तुमसे मिलने की बाद याद करके मेरे नैनों से आंसू आ जाते है। अब उनके जीवन में दुखों का वास हो गया है।

(घ) प्रसंग : प्रस्तुत पंक्ति अंतरा भाग दो नमक पुस्तक में संकलित कविता से ली गयी है। इसकी रचना रीतिकाल के कवि घनानंद ने की है। प्रस्तुत पंक्ति में कवि अपनी प्रेमिका के वियोग से उत्पन्न अपने दुःख का वर्णन करते है।

व्याख्या : कवी कहते है की मेरे ह्रदय में कभी किसी और का स्मरण नहीं आया। मैंने अब तक किसी को पत्र नहीं लिखा। मुझे हैरानी है की तुमने मेरा पत्र पढ़े बिना फाड़ के फेंक दिया। यानी उसने मेरे प्यार को समझे बिना मुझे अकेला छोड़ दिया।